ओम्

प्रैस समाचार **दिनांक 31 मई, 2014**

-गुरूकुल पौन्धा देहरादून के तीन दिवसीय 14हवें वार्षिकोत्सव का दूसरा दिवस-

'गुरूकुल को देखकर मुझे प्रसन्नता हुई हैः कैप्टने अभिमन्यु सिंह'

देहरादून 31 मई। गुरूकुल पौन्धा, देहरादून का 3 दिवसीय चौदहवें वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन आज प्रातःकाल यजुर्वेद पारायण यज्ञ आर्य जगत के चोटी के विद्वान डा. सोमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व व मार्गदर्शन में हुआ। अनेक यजमानों, गुरूकुल में पधारे महानुभाव व स्त्री-पुरूषों ने अनेक वृहत यज्ञकुण्डों में शुद्ध ओषधियुक्त हव्य द्रव्यों व गोघृत से आहुतियां दी। यजुर्वेद के मन्त्रों का पाठ गुरूकुल के ब्रह्मचारियों ने किया जिससे सभी दिशाओं का वातावरण सुगन्धित हो गया। यज्ञ के पश्चात भजनों का कार्यक्रम हुआ जिसके अनन्तर पुरोहित सम्मेलन हुआ। पुरोहित सम्मेलन के पहले वक्ता स्वामी श्रद्धानन्द थे। आपने अपने प्रवचन में पुरोहित शब्द की सारगर्भित व्याख्या की। पुरोहित वह होता है जो यजमान का पूरा हित करे। स्वामीजी ने अपने प्रवचन में पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा व संस्कारों के अनेक विषयों को उठाया व उनकी समीक्षा की। स्वामी श्रद्धानन्द के पश्चात आर्य जगत के विख्यात भजनोपदेशक श्री सत्यपाल सरल के भजन, गीत व प्रवचन हुए जिसमें उन्होंने तन्मय होकर दो गीत प्रस्तुत किये तथा पुरोहितों से जुड़े प्रश्नों को प्रस्तुत कर अपने विचार आर्य जनता के सम्मुख रखे। उनका कहना था कि पुरोहित अपने यजमान के हित का ध्यान रखें और यजमान भी पुरोहितों से परामर्श लेते रहें व भिन्न-2 अवसरों पर 16 संस्कारों का अनुष्ठान करते-कराते रहें। श्री सरल के पश्चात आर्य समाज के चोटी के विद्वान व ऋषि भक्त डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि पुरोहित सम्मेलन को आयोजित करना उचित है जिससे इस विषय से जुडे प्रश्नों व समस्याओं पर विचार किया जा सके। उन्होंने कहा कि पुरोहित सम्मेलन के आयोजन से वेदों व आर्य समाज के प्रचार को दिशा मिलेगी। आर्य समाज में कम होती जा रही विद्वानों व उपदेशकों की समस्याओं पर भी उन्होंने अपने विचार किये। उन्होंने कहा कि आर्य समाज में पुरोहितों की संख्या नगण्य हो गयी है, इस पर उन्होंने चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि सभी सन्यासियों को अच्छा वक्ता व प्रचारक होना चाहिये जबकि स्थिति यह है कि हमारे कुल सन्यासियों में से प्रायः 10 प्रतिशत सन्यासी ही ऐसे हैं जो प्रवचन दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमारे पौराणिक भाई संस्कारों को वेदों की पद्धति से नहीं कराते हैं। उन्होंने कहा कि वेदों के अनुसार मनुष्य के मृतक शरीर का वैदिक रीति से अन्त्येष्टि अर्थात दाह संस्कार ही होना चाहिये। पौराणिक साधुओं को जल समाधि देने व उन्हें दफनायें जाने जैसे कृत्य को उन्होंने वेदों के विरूद्ध बताया। अन्त्येष्टि संस्कार सभी देशों, सभी कालों व सभी मत एवं सम्प्रदाय के लोगों के लिए समान व उचित है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक पिता अपने पुत्र के विद्या व ज्ञान में अधिक होने पर प्रसन्न होता है और स्वामी दयानन्द को शिष्य रूप में पाकर व उनके विद्या सम्पन्न होकर वेदों का प्रचार करने से उनके गुरू स्वामी विरजानन्द सरस्वती हृदय से उनके प्रति प्रसन्नता व गौरव अनुभव करते थे।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री के प्रवचन के बाद श्रीमति मीनाक्षी पंवार की धार्मिक गीतों की एक सीडी का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर उन्होंने अपने दो गीत व अपने विचार प्रस्तुत किये। उनके भजनों को श्रोताओं ने खूब सराहा व उनकी सीडी प्राप्त कीं। श्रीमति मीनाक्षी जी के बाद द्रोणस्थली कन्या गुरूकुल, देहरादून की आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने श्रद्धालुओं को सम्बोधित कर कहा कि वैदिक सत्संग रूपी गंगा में स्नान करने से यहां उपस्थित श्रद्धालुओं को निश्चित ही लाभ होगा। सत्संग में जाने से आचरण शुद्ध हो सकता है। उन्होंने गीता का उल्लेख कर कहा कि कृष्ण जी ने अर्जुन को बताया था कि संसार में सबसे मूल्यमान केवल ज्ञान व धर्म का आचरण ही हैं। उन्होंने कहा कि पुरोहित सतत व निरन्तर देश, समाज व व्यक्ति का कल्याण करता है। उन्होंने आगे कहा कि ईश्वर भी पुरोहित है और हमें भी संसार का उपकार करने के लिए पुरोहित बनना है। डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि 16 संस्कारों को विधिपूर्वक कराने वाला भी पुरोहित होता है और देश, समाज व व्यक्ति से अज्ञान के अन्धकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश करने वाले व्यक्ति भी पुरोहित होते हैं। उन्होंने श्रोताओं का आह्वान किया कि वह राष्ट्र के पुरोधा बनें। उन्होंने आगे कहा कि संस्कारों के बिना हमारा जीवन व्यर्थ है। बच्चे के नामकरण संस्कार में उसकी जिह्वा में सोने की श्लाका से ''ओम्'' लिखें जाने को उन्होंने उस बालक को जीवन में ओम् का चिन्तन करने की प्रेरणा दिया जाना बताया। उन्होंने कहा कि संस्कार जीवन को ऊपर उठाने के लिए किए जाते हैं। विदुषी वक्ता ने कहा कि विवाह संस्कार में शिलारोहण की प्रक्रिया गृहस्थ जीवन में आने वाली कठिनाईयों व समस्याओं में स्थिर रहने की शिक्षा देने के लिए कराई जाती है। उन्होंने यज्ञोपवीत व उपनयन संस्कार में ब्रह्मचारी शिष्य को यज्ञोपवीत देने को आचार्य व शिष्य के चित्त को आचार्य के अनुकूल बनाने की प्रक्रिया बताया और कहा कि सब को ईश्वर का चिन्तन व उसके नाम ''ओम'' का जप करना चाहिये।

आज के आयोजन में एक महत्वपूर्ण प्रवचन स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती का था जिसमें उन्होंने कहा कि हमारी आत्मा जिसे जीव कहते हैं, की यात्रा मोक्ष की अवधि की समाप्ति से आरम्भ होती है और अगले मोक्ष की प्राप्ति तक चलती है। हमें यह जीवन व शरीर परमात्मा से प्राप्त हुआ है। वह हमारा पालन कर रहा है। हम लोग भोजन मुख में डाल देते हैं परन्तु बाकी का कार्य परमात्मा करता है। वही भोजन को पचाता है, नाना प्रकार के रस बनाता है, हमारा रक्त व मज्जा को भी बनाना है और हमें वह हमारी इन्द्रियों व सभी अंगों को स्वस्थ रखता है। वह परमात्मा एक चेतन सत्ता है जो हमेशा हमारे साथ रहती है। वह परमात्मा हमारे अन्दर है, सर्वत्र विद्यमान है व जगत की प्रत्येक वस्तु में व्यापक है। उन्होंने इस मिथ का खण्डन किया कि वृद्धावस्था में साधना की जा सकती है। हमें साधना बचपन से ही आरम्भ कर देनी चाहिये। हमारे गुरूकुलों में बाल्यकाल में ही उपासना व साधना का ज्ञान व अनुभव कराया जाता है। उन्होंने कहा कि हमें सुख देने वाली, हमारा कल्याण, रक्षा व पालन करने वाली एक चेतन सत्ता ''ईश्वर'' हर क्षण हमारे साथ है जो हमें सुख देती हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम उसकों जानकर व उपासना आदि करके उसका सक्षात्कार कर जीवन को सफल बनायें।

आयोजन को प्रसिद्ध बीजेपी नेता और आर्यसमाज के अनुयायी श्री कैप्टेन अभिमन्यु सिंह ने भी सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि मेरी यहां आने की इच्छा थी। मेरे माता-पिता भी यहां आये थे। उनसे मैं यहां की चर्चा सुनता था। वह मुझे यहां जाने की प्रेरणा करते थे। आज मुझे यहां आने और यहां गुरूकुल को देखने का साक्षात अवसर मिला है। प्रसन्नता हुई कि आज भी आर्य समाज उन चुनौतियों को जो कि दयानन्द के समय में थी, स्वीकार करता है और उसका उत्तर देने के लिए तत्पर है। उन्होंने कहा कि मेरे पिता कहा करते थे कि मनुष्यों को सच्चे व अच्छे मित्र बनाने चाहिये जैसा कि वेद मन्त्रों में कहा गया है। वह ऐसे हों कि जीवन में बड़ी से बड़ी सफलता व उच्च स्थिति को प्राप्त करने पर भी वह मित्र सही आंकलन कर निर्भिकता पूर्वक कल्याण की सही व सच्ची सलाह दे सकें। उन्होंने कहा कि जितनी खरी बातें आर्य समाजों के मंचों से सुनने को मिलती हैं उतनी अन्य किसी संस्था के मंच से सुनने को नहीं मिल सकती। अपने जीवन की कमियों की आलोचना, अध्ययन व चिन्तन जैसा आर्य समाज में किया जाता है वैसा कहीं नहीं किया जाता। विद्वान नेता कैप्टेन अभिमन्यु सिंह ने कहा कि महर्षि दयानन्द के विचार व दर्शन आज भी जीवित है जबकि सारा संसार हमारा दुश्मन रहा है। उन्होंने कहा कि **'बात है कुछ ऐसी कि हस्ती मिटती नहीं हमारी जबकि रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा।' श्री अभिमन्यु ने आगे कहा कि मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है जब मैं आर्य समाज के सत्संगों में जाकर वहां बैठकर विद्वानों के विचारों को सुनता हूं और मुझे उनसे लाभ उठाने का अवसर मिलता है।**

पुरोहित सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण श्री वीरेन्द्र शास्त्री ने देते हुए पुरोहित को दी जाने वाली दक्षिणा का उल्लेख कर कहा कि यजमान दक्षिणा देने में कमी कर जाता है। उन्होंने कहा कि पुरोहित को पुष्कल दक्षिणा दें। उन्होंने कहा पुरोहितों को इतनी दक्षिणा दें जिससे उन्हें मांगनी न पड़ें। आगे उन्होंने कहा कि आजकल आर्य समाज के नेता पुरोहित से एक चपरासी जैसा व्यवहार करते हैं। वह चाहते कि आर्य समाज का पुरोहित उनके घर के काम करे व उनके बच्चों को स्कूल लाये व ले जाये। विद्वान वक्ता ने कहा कि आजकल सत्संगों में सदस्य विद्वानों की बातें सुनते तो हैं परन्तु उन पर अमल नहीं करते। उन्होंने कहा कि यदि श्रद्धा न हो तो यज्ञ व सत्संग करने कराने से कोई लाभ नहीं। आगे विद्वान वक्ता ने कहा कि आर्य समाज में एक बहुत बुरी बात यह है कि आज कुछ विद्वान संस्कार की विधि में कमियां निकालते हैं और संस्कार में मनमानी भी करते हैं। उन्होंने दुःख भरे शब्दों में श्रोताओं व मंचस्थ विद्वानों का ध्यान दिलाया कि आज हमारी संस्कारों की पद्धति अलग-अलग होती जा रही है। उन्होंने कहा कि पुरोहितों के प्रशिक्षण के लिए शिविर लगायें जाने चाहियें। पुरोहित सदाचारी, धार्मिक, जितेन्द्रिय, निर्लोभी आदि गुणों से भरे हुए हों। उन्होंने एक ऐसे डाकू कि कथा सुनाई जो एक ऋषि के आश्रम में जाकर साधना कर उच्च विद्वान बन गया। उसी राज्य में जब राजा के राजपुरोहित की नियुक्ति की जाने वाली थी तो ऋषि के पास उसका प्रस्ताव आया। उन्होंने अपने आश्रम के उस व्यक्ति को बुलाकर राजा के पास जाने को कहा। उस व्यक्ति ने अपने डाकू होने की बात बताई तो भी ऋषि ने उसे ही भेजा। राजा के पास पहुंचने पर राजा ने उसे पहचान लिया और प्रसन्न होकर कहा कि हमारे राज्य का सौभाग्य है कि एक व्यक्ति पश्चाताप कर और सत्य के मार्ग पर चलकर इतना विद्वान व महान हो सकता है। उसका राजपुरोहित होना उस राजा ने स्वीकार किया। विद्वान वक्ता ने महाराणा प्रताप व उनके भाई शक्ति सिंह के बीच परस्पर हुए युद्ध में उन्हें रोकने के लिए राजपुरोहित ने कटार अपने शरीर में चुभो कर अपना प्राणान्त कर लिया था जिससे वह दोनों बच गये और मेवाड़ राजय की रक्षा हो चुकी। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

-मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला-2
देहरादून-248001
फोनः 09412985121